...ालय अनुमण्डल दण्डाधिकारी, धनबाद

एम० पी० केश नं० ....579/2017.... धारा 107 द.प्र.स.

...की तिथि	आदेश और पदाधिकारी का हस्ताक्षर	आदेश पत्र पर की गई कारवाई
...5.17	सीताराम कुम्भकार बनाम श्री वकील मंडल ....गो०वि०उ०ले०.... थाना अप्राथमिकी सं० 28/17 प्राप्त हुआ। अवलोकन से स्पष्ट होता है कि जाँच पदाधिकारी स० अ०नि०/अ०नि० ....गो०वि०उ०ले०.... ने जाँच कर अपना प्रतिवेदन थाना प्रभारी ....गो०वि०उ०ले०.... थाना एवं अ० निरी०....गो०वि०उ०ले०.... ने अग्रसारित किया है जिसमें उल्लेख है कि उभय पक्षों की बीच ....जमीन विवाद को.... लेकर तनाव है। उभय पक्ष कानून को अपने हाथों में लेकर स्थानीय परिशांति भंग करने पर तुले हुए तथा एक दूसरे के जान-माल पर खतरा पहुँचा सकते है। प्रतिवेदन से स्पष्ट होता है कि पक्षों के बीच गंभीर तनाव व्याप्त है तथा इनके कार्यों से कभी भी लोक परिशांति भंग हो सकती है। पुलिस प्रतिवेदन से संतुष्ट होकर मैं उभय पक्षों के विरुद्ध धारा 107 द०प्र०सं० की कार्यवाही प्रारम्भ करते हुए उभय पक्षों को निर्देश देता हूँ कि वे मेरे न्यायालय में दिनांक ....22.5.17.... को 10.30 बजे पूर्वाह्न उपस्थित होकर अपना कारण पृच्छा दाखिल करें कि क्यों नहीं लोक परिशांति बनाये रखने के लिए आपके ₹ 5000.00 रू० का दो सम्प्रतिभुतियों के साथ बन्धपत्र लिया जाय।	9.5.17 17/5/17 26/5/17 6/6/17 16/6/17 01/7/17 13/7/17 28/7/17 14/8/17 31/8/17 12/9/17 25/9/17 10/10/17 24/10/17 7/11/17 22/11/17 6/12/17 21/12/17 8/01/18 24/01/18 7.2-18 10/2/18 समाप्त
	लेखापित एवं संशोधित 04/05 (हस्ताक्षर) अनुमंडल दण्डाधिकारी धनबाद 04/05 (हस्ताक्षर) अनुमंडल दण्डाधिकारी धनबाद	

Scanned with OKEN Scanner

न्यायालय रेणु कुमारी, कार्यपालक दण्डाधिकारी, धनबाद।
राष्ट्रीय लोक अदालत, धनबाद

एम.पी. वाद संख्याः– 579/13
धारा – 107 द०प्र०सं०

10.02.2018	वाद अभिलेख को राष्ट्रीय लोक अदालत के समक्ष प्रस्तुत किया गया। वाद अभिलेख का अवलोकन किया गया। वाद अभिलेख के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उभयपक्ष कई तिथियों से लगातार अनुपस्थित है तथा उभयपक्ष को वाद की कार्यवाही में कोई अभिरूची प्रतित नहीं होता है। ऐसा प्रतित होता है कि दोनों पक्षों के बीच अशांति व्याप्त नहीं है। वाद की कार्यवाही कालबाधित हो चुका है। अतः कार्यहित एवं न्यायहित के आलोक में इस वाद की कार्यवाही समाप्त की जाती है। Sd/- 10/02/18 राष्ट्रीय लोक अदालत हेतु प्राधिकृत पीठासीन पदाधिकारी, धनबाद।

Digitally signed by PREM KUMAR TIWARY
Date: 2023.08.23 15:50:22 +05:30
Location: 192.168.29.44

Scanned with OKEN Scanner